

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 4, सटीक और स्पष्ट, गहन, परिवर्तनकारी, संचारी और बाइबिल सर्वेक्षण

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 4 है, आगमनात्मक पद्धति, सटीक और स्पष्ट, गहन, परिवर्तनकारी, संचारी, और फिर, एक संपूर्ण बाइबिल सर्वेक्षण।

हम यहां इस सूची को पूर्ण करना चाहते हैं जिसे हम आगमनात्मक दृष्टिकोण के संबंध में दृढ़ विश्वास मानते हैं, जो केवल एक मिनट में प्रक्रिया के संदर्भ में हम वास्तव में जो प्रस्तुत करते हैं उसकी नींव रखेगी।

इसके अलावा, यह सटीक और विशिष्ट होना चाहिए, सटीक, सटीक, और विशिष्टता सटीकता और मौलिकता और गहनता, यानी गहराई दोनों की कुंजी है। जो जितना अधिक सामान्य, जितना अधिक व्यापक, जितना अधिक अस्पष्ट होगा, उतनी ही अधिक संभावना है कि वह गलत होगा, क्योंकि यदि यह बहुत ढीला है, यदि यह पर्याप्त रूप से अस्पष्ट है, तो इसे कई तरीकों से लिया जा सकता है, जिसमें गलत भी शामिल है। तरीके वगैरह।

हमारी व्याख्या में अस्पष्ट या अनिर्दिष्ट होने से, हम वास्तव में कुछ ऐसा लेकर आते हैं जो काफी व्यापक है, और जब हम इसे भरने जाते हैं, तो हम विवरण इस तरह से भर रहे होते हैं जो स्वयं धर्मग्रंथों के साक्ष्य को प्रतिबिंबित नहीं करता है। यह सटीक और विशिष्ट होने, गहराई, पैठ, गहराई की कुंजी भी है। वास्तव में, विशिष्टता व्यावहारिक रूप से मौलिकता और गहनता का पर्याय है, और व्यापकता, या अविशिष्ट होना अनिवार्य रूप से सतहीपन का पर्याय है।

अब, इसका वास्तव में मतलब यह है कि किसी भी परिच्छेद के साथ काम करते समय, लक्ष्य यह होना चाहिए कि इस परिच्छेद का इस अर्थ में क्या अर्थ है कि, यह परिच्छेद धर्मग्रंथ के पूरे सिद्धांत में क्या योगदान देता है? यह अनुच्छेद धर्मग्रंथ के सिद्धांत के भीतर कौन सा सत्य सिखाता है जो धर्मग्रंथ के किसी भी अन्य परिच्छेद की तरह बिल्कुल नहीं सिखाया जाता है? इस अनुच्छेद का और इस अनुच्छेद के अर्थ का धर्मग्रंथ के संपूर्ण सिद्धांत में क्या अनोखा योगदान है, ताकि यदि यह मार्ग न हो तो धर्मग्रंथ का सिद्धांत खराब हो जाए? अब, मुझे एहसास हुआ कि यह एक उच्च लक्ष्य है, जिस तक पहुंचना एक कठिन लक्ष्य है, इसलिए आप यहां कुछ ऐसा ढूंढने का प्रयास कर रहे हैं जो एक तरह से, धर्मग्रंथ के पूरे सिद्धांत में एक अद्वितीय योगदान है ताकि आप कुछ भी न पा सकें अन्य अनुच्छेद जो इस सत्य को इस तरह, इस विशिष्ट तरीके से संप्रेषित करता है। और यह हमेशा साकार नहीं हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह लक्ष्य होना चाहिए, एक व्याख्या के विपरीत, या उस मामले के लिए, एक अनुप्रयोग, जिसे आप किसी दिए गए मार्ग से प्राप्त करते हैं, जिसे आप समान रूप से सैकड़ों अन्य मार्ग से प्राप्त कर सकते हैं बाइबिल के भीतर. सटीक और विशिष्ट होने से हमारा यही तात्पर्य है।

यहाँ इस परिच्छेद का सटीक और विशिष्ट अर्थ क्या है? अब, सोच और संचार दोनों के संदर्भ में स्पष्ट, स्पष्ट होना महत्वपूर्ण है। स्पष्ट रूप से सोचना, यानी बहुत सावधानी से सोचना और साक्ष्य से निष्कर्ष तक बहुत सावधानी से तर्क करना, लेकिन संचार में भी स्पष्ट रहना। जब आप इस परिच्छेद के अर्थ को पढ़ाने या प्रचार करने के लिए संवाद करते हैं, तो यथासंभव स्पष्ट रूप से बताएं कि यह परिच्छेद क्या कह रहा है, यह हमें ईश्वर, ईश्वर के चरित्र, ईश्वर के व्यक्तित्व और हमारे लिए ईश्वर की इच्छा के बारे में क्या सिखा रहा है।

अब, एक विचारधारा है जो बताती है कि हम किसी भी अनुच्छेद की व्याख्या करने में जितनी गहराई से, अधिक कठोरता से काम करेंगे, उस अनुच्छेद के अर्थ को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना उतना ही कठिन होगा। आप अपनी व्याख्या में इतने विश्लेषणात्मक, इतने कठोर हो सकते हैं कि आप वास्तव में इस अनुच्छेद की समझ के साथ आ जाएंगे कि उन लोगों से संवाद करना मुश्किल होगा, यदि असंभव नहीं है, जिनके पास आपके स्तर की विशेषज्ञता नहीं है। मैं यह सुझाव देना चाहता हूँ कि, मेरे निर्णय में, विपरीत सत्य है।

कई बार परिच्छेदों या परिच्छेदों के अर्थ को अस्पष्ट, अस्पष्ट, अच्छी तरह से संप्रेषित नहीं किए जाने का कारण यह नहीं है कि उपदेशक या शिक्षक ने परिच्छेद का इतनी सावधानी से या इतनी अच्छी तरह, इतनी कठोरता से अध्ययन किया है, और इसे बहुत अच्छी तरह से जानता है। वास्तव में इसके विपरीत, क्योंकि वह व्यक्ति, उपदेशक, इस अनुच्छेद को अच्छी तरह से समझ नहीं पाया है। इस अनुच्छेद का अर्थ क्या है, इस संबंध में वह व्यक्ति स्पष्ट नहीं है, अपनी सोच में स्पष्ट नहीं है, और इसलिए, उस उपदेशक या शिक्षक की अपनी सोच के संदर्भ में स्पष्टता की कमी स्पष्टता की कमी में व्यक्त होती है उस व्यक्ति का संचार. बाकी सब कुछ समान होने पर, जितना बेहतर हम किसी चीज़ को समझते हैं, जितना अधिक पूर्णता से, जितनी अधिक गहराई से हम किसी अंश को समझते हैं, उतनी ही अधिक संभावना होगी कि हम इसे उन लोगों तक स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने में सक्षम होंगे जिनके पास हमारे स्तर की समझ नहीं है। .

अब, निःसंदेह, यह, जैसा कि मैं कहता हूँ, मर्मज्ञ और गहन होने की ओर ले जाता है। हमने वास्तव में अनिवार्य रूप से इस बारे में बात की। यह वास्तव में मर्मज्ञ और गहन व्याख्या के बिंदु पर है कि शास्त्र हमारे लिए रोमांचक और सहायक बन जाते हैं।

और यह वास्तव में उनकी अपनी प्रकृति के अनुरूप है, क्योंकि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि ये लेख गहरे हैं। मेयर स्टर्नबर्ग की अभिव्यक्ति का उपयोग करने के लिए, बाइबिल मोटी है। इन अंशों में गहराई है।

इस तथ्य को और क्या समझा जा सकता है कि चर्च ने पिछले 2,000 वर्षों में इन ग्रंथों की व्याख्या के लिए अपना सबसे बड़ा दिमाग लगाया है, और फिर भी हम इन ग्रंथों के अर्थ के बारे में पिछले 50 वर्षों की तुलना में अधिक समझ में आए हैं। उससे 2,000 वर्ष पहले? इसे केवल बाइबिल की प्रकृति द्वारा इसकी मजबूती के संदर्भ में, इसकी मोटाई के संदर्भ में, इसकी गहराई के संदर्भ में समझाया जा सकता है। इसलिए, फिर से, बाइबिल के साथ सतही स्तर पर व्यवहार करना वास्तव में इसके चरित्र के अनुसार, इसकी अपनी प्रकृति के अनुसार व्यवहार करना नहीं है। वास्तव में, हालांकि अक्सर यह इरादा नहीं होता है, लेकिन ऐसा करना ही पवित्रशास्त्र का अर्थ है।

यह उन्हें सतही मानता है, जबकि वास्तव में, वे गहरे होते हैं। उपदेश या शिक्षण में, जब आप मौलिक, गहन अंतर्दृष्टि के साथ आते हैं तो लोग वास्तव में आप जो कहना चाहते हैं उसमें दिलचस्पी लेते हैं। एक बात के लिए, यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो बौद्धिक रूप से इच्छुक नहीं हैं, यह बौद्धिक रूप से उत्तेजक है।

लेकिन यह भी है, और यह और भी महत्वपूर्ण है, यह आध्यात्मिक रूप से उत्तेजक है। लोग ऐसे उपदेश से दूर आते हैं और कहते हैं, मैंने उस अनुच्छेद को बार-बार पढ़ा है, या मैं उस अंश को अपने पूरे जीवन में जानता हूँ, और मैंने वास्तव में इसे कभी उस तरह से नहीं समझा है। अब मैं देख रहा हूँ कि यह मुझसे इस तरह से बात करता है जिसका मुझे कभी एहसास नहीं हुआ था कि यह ऐसा कर सकता है।

अब, उपदेश या शिक्षण के संदर्भ में, मैं बस इतना कह सकता हूँ कि उपदेशक के कंधों से उपदेश देने, कहने, उपदेशक की अपनी चतुराई के आधार पर एक रोमांचक, उत्तेजक और आकर्षक उपदेश देने का बहुत बड़ा बोझ हट जाता है। धर्मग्रंथ को अपना कार्य करने दें। हम कह सकते हैं कि पवित्रशास्त्र और पवित्रशास्त्र की चतुराई को, शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में अब चतुराई का उपयोग करते हुए अनुमति दें।

अपने उपदेश और अपने शिक्षण को रोमांचक बनाने के लिए पाठ के भीतर निहित उत्साह को अनुमति दें। आपको वचन के प्रचार को रोमांचक बनाने के लिए काम करने की ज़रूरत नहीं है। यदि वचन का उपदेश अच्छी तरह से किया जाता है, अर्थात्, यदि वास्तव में यह गहन व्याख्या को प्रतिबिंबित करता है, तो यह अपने आप में रोमांचक होगा।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि, उपदेशात्मक और शैक्षणिक संचार, उपदेश और शिक्षण संचार के कौशल विकसित करने के लिए कोई जगह नहीं दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, पूर्वजों, अरस्तू ने एआर इंटेलीजेंसी और एआर एक्सप्लिकैंडी दोनों की आवश्यकता के बारे में बात की, समझने की कला, जो कि पवित्रशास्त्र की व्याख्या है, और संचार की कला, व्याख्या, जो उपदेश या शिक्षण या परामर्श या संचार का जो भी रूप है लेता है।

आपको समझ और संचार दोनों का हिसाब रखना होगा। दोनों में कौशल हैं, लेकिन मैं यहां जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि आप, फिर से, दोनों को पूरी तरह से अलग नहीं कर सकते। जैसे-जैसे आप अपने उपदेश और शिक्षण में पवित्रशास्त्र की गहन, मजबूत व्याख्या में संलग्न होते हैं, आपका संचार उस हद तक, अधिक आकर्षक, अधिक रोमांचक और सर्वोत्तम संभव तरीके से होगा।

फिर, जैसा कि हमने सुझाव दिया, यह मौलिक और रचनात्मक होना चाहिए। अब, हम यहां जिस बारे में बात कर रहे हैं वह उत्पादन की नहीं, बल्कि पुनरुत्पादन की रचनात्मकता है। ऐसे कुछ लोग हैं जो मूल या रचनात्मक बाइबिल व्याख्या के बारे में सोचते हैं कि इसमें कुछ ऐसा शामिल है जो इस अर्थ में मौलिक है कि यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में मैंने सोचा है और वास्तव में यह बाइबिल लेखक के संप्रेषणीय इरादे के भीतर नहीं पाया जाता है।

यह किसी ऐसी चीज़ के साथ आने का मामला नहीं है जो मौलिक या रचनात्मक है, यानी कुछ ऐसा बनाना जो मौलिक हो, बल्कि वास्तव में उस अर्थ को निकालने में मौलिक होना है जो पहले से ही मौजूद है, जो पहले से ही बनाया जा चुका है। यह लेखक है, जिसके बारे में हमने पहले बात की थी, निहित लेखक जो अर्थ पैदा करता है। हमें वहां मौजूद अर्थ को दोबारा बनाने और पुनः प्रस्तुत करने में मौलिक होने की जरूरत है।

हावर्ड किस, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, प्रिंसटन में पढ़ाया था, प्रिंसटन थियोलॉजिकल सेमिनरी में वर्षों तक आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पढ़ाया था, ने कहा था कि एक दुभाषिया का काम एक संगीतकार के काम के मुकाबले एक कंडक्टर या कलाकार के काम की तरह है। इसलिए, यह पाठ से नए विचार बनाने के मामले में मौलिक या रचनात्मक होने का मामला नहीं है, बल्कि पाठ से उन विचारों को प्राप्त करने का मामला है जो मौजूद हैं लेकिन इतने स्पष्ट नहीं हैं, और निश्चित रूप से, उन्हें नए और रचनात्मक तरीकों से समझना है। अब, यह वास्तव में बाइबिल अध्ययन की ओर ले जाता है, हम सोचते हैं, मनोरंजक होने के नाते, यानी, घटना के रूप में बाइबिल मुठभेड़, ताकि जब हम बाइबिल मार्ग की व्याख्या में संलग्न हों, तो हम वास्तव में, एक अर्थ में, रहस्योद्घाटन को फिर से बना रहे हों अनुभव, ईश्वर द्वारा स्वयं को लेखक के समक्ष और लेखक के माध्यम से हम तक प्रकट करने का अनुभव।

निस्संदेह, यह आदर्श रूप से हमारे उपदेश या शिक्षण में व्यक्त किया जाना चाहिए। मैंने कॉलेज में पढ़ाई की, जैसा कि मैंने हमारी प्रस्तुतियों की शुरुआत में बताया था, स्प्रिंग आर्बर यूनिवर्सिटी में। यह दक्षिणी मिशिगन में एक छोटा सा कॉलेज है।

मेरे बहुत ही रचनात्मक प्रोफेसरों में से एक बाइबिल अध्ययन के प्रोफेसर डब्ल्यू राल्फ थॉम्पसन थे, जो एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और स्वयं एक बहुत ही प्रतिभाशाली शिक्षक थे। उन्होंने महान प्रिंसटन प्रोफेसर हॉवर्ड टिलमैन किस्ट के अधीन अध्ययन किया था, कम से कम एक या दो पाठ्यक्रम लिए थे। किस्ट गर्मियाँ बिताता था, जैसा कि मैं इस सप्ताह बिता रहा हूँ।

वह विनोना लेक स्कूल ऑफ थियोलॉजी सहित प्रिंसटन के बाहर विभिन्न स्थानों पर अपने ग्रीष्मकालीन शिक्षण से कुछ सप्ताह निकालेंगे। यहीं पर राल्फ थॉम्पसन किस्ट की शिक्षा के अधीन बैठे थे। उन्होंने यिर्मयाह की पुस्तक पर वहां किस्ट के तहत एक पाठ्यक्रम लिया।

थॉम्पसन ने मुझे बताया कि यह वर्षों बाद की बात है, बेशक, उसने कक्षा के एक सत्र के अंत में पाठ्यक्रम लिया था जब किस्ट ने जेरेमिया के हिस्से पर पढ़ाना समाप्त कर दिया था, कि कक्षा उसके शिक्षण और शक्ति से इतनी प्रभावित हुई थी हावर्ड टिलमैन किस्ट की शिक्षा में यिर्मयाह के माध्यम से आए परमेश्वर के वचन के कारण, पूरे डेढ़ घंटे तक, उस कक्षा में कोई भी हिलने-डुलने में सक्षम नहीं था। क्लास खत्म हो चुकी थी, लेकिन कोई भी कमरे से बाहर नहीं निकल पा रहा था। जब थॉम्पसन ने मुझे यह बताया, जो उस घटना के लगभग 30 साल बाद था, तो उसकी आँखों में आँसू आ गए।

यह उनके लिए एक बहुत ही रचनात्मक अनुभव रहा। वास्तव में बाइबल को यही करना चाहिए और बाइबल की शिक्षा और उपदेश में यही शामिल होना चाहिए। निःसंदेह, यह संख्या 14 की ओर ले जाता है।

इसे परिवर्तनशील होना चाहिए. निस्संदेह, इसमें ईश्वर का रहस्योद्घाटन शामिल है। इससे एक रहस्योद्घाटन होता है।

यह हमारे सामने भगवान को प्रकट करता है। निस्संदेह, यह ईश्वर के दृष्टिकोण से दुनिया को हमारे सामने प्रकट करता है और हमारे स्वयं को हमारे सामने प्रकट करता है। मेरे अपने डॉक्टर पर्यवेक्षक और बहुत अच्छे दोस्त, महान न्यू टेस्टामेंट विद्वान जैक डीन किंग्सबरी ने बाइबिल के बारे में बात की है जो वास्तविकता का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि यह हमें दुनिया को देखने का कारण बनता है। यह हमें वास्तविकता को अलग ढंग से देखने का कारण बनता है। यह हमें खुद को अलग तरह से देखने का कारण बनता है।

परमेश्वर के वचन के संबंध में नए नियम में महान कथनों में से एक, और यह पवित्रशास्त्र से संबंधित है, निस्संदेह, लेखक के मन में था, जाहिर है, हमारे लिए मुख्य रूप से, सबसे प्रत्यक्ष अर्थ में, क्या होगा पुराने नियम का धर्मग्रन्थ, इब्रानियों अध्याय 4 में पाया जाता है। निःसंदेह, आपको यह याद है। क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है, और किसी भी दोधारी तलवार से भी अधिक तेज है, आत्मा और आत्मा को, गांठ गांठ और गूदे गूदे को अलग करके छेदता है, और हृदय के विचारों और इरादों को पहचानता है। उसके साम्हने कोई भी प्राणी छिपा नहीं है, परन्तु जिस से हमें काम करना है उसकी आंखों के साम्हने सब खुले और प्रगट हैं।

वास्तव में, उस कथन का सार यह है कि हम वास्तव में स्वयं को नहीं जानते हैं। हम अपने भीतर को नहीं जानते। हम अपने हृदयों को तब तक नहीं जानते जब तक परमेश्वर का वचन हमारे अंतरतम को नहीं खोलता और हमारे हृदयों को प्रकट नहीं करता, हमारे अंतरतम को हमारे सामने प्रकट नहीं करता।

वह शब्द का एक कार्य है। इसीलिए मैं कहता हूं कि इसमें न केवल ईश्वर, बल्कि दुनिया, वास्तविकता का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण और यहां तक कि खुद को भी प्रकट करना शामिल है। इसीलिए, जेम्स, जैसे, जैसा कि हम इस श्रृंखला में बाद में देखेंगे, जेम्स शब्द, या कानून को वास्तव में धर्मग्रंथ, भगवान के शब्द, एक दर्पण के रूप में संदर्भित करेगा, और हम इससे संबंधित हैं एक दर्पण के रूप में।

जब हम शब्द को देखते हैं तभी हम वास्तव में स्वयं को देखते हैं। और फिर, अंततः, इसे संप्रेषित किया जाना चाहिए। यह अक्सर कहा जाता है कि हम वास्तव में किसी चीज़ को तब तक नहीं समझते जब तक हम उसे सिखाते नहीं।

कोई भी बात संप्रेषित होने के बाद ही पूरी तरह समझ में आती है। केवल तभी जब आपने स्वयं को किसी चीज़ को संप्रेषित करने का कार्य सौंपा है, तभी आप इसे पूरी तरह से समझते हैं। तो, फिर से, हम पूरा चक्कर लगाते हैं।

यह ईसाई मंत्रालय के लोगों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है। लेकिन फिर भी, निस्संदेह, सभी ईसाई मंत्री हैं। आप जानते हैं कि।

विश्वासियों का पुरोहितवाद, ताकि हम सभी धर्मग्रंथों के संचार में शामिल हों, लेकिन विशेष रूप से, व्यावसायिक रूप से, ईसाई मंत्री हैं।

और इसलिए, आप धर्मग्रंथों की व्याख्या करते हैं, जो धर्मग्रंथों को संप्रेषित करने का आधार है, लेकिन, फिर से, यह एक सर्पिल, एक सर्पिल प्रकार की चीज़ है। संचार करने में, आप वास्तव में धर्मग्रंथों को बेहतर ढंग से समझने लगते हैं, जिससे उन्हें बेहतर ढंग से संप्रेषित किया जा सकता है, जिससे फिर आगे संचार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, क्या यह सुंदर नहीं है कि कैसे जीवन एक सीधी रेखा के विपरीत एक सर्पिल है? खैर, अब तक हमने जो भी बात की है, वह वास्तव में हम जो करना चाहते हैं उसके लिए प्रोलोगोमेना है, और वह है, सैद्धांतिक नींव रखने के बाद, एक प्रक्रिया का सुझाव देना, भगवान के वचन को सर्वोत्तम रूप से समझने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया, दोनों में। मूल अर्थ, व्याख्या और इसके समकालीन अर्थ, विनियोग या अनुप्रयोग के संदर्भ में।

अब, वास्तव में तीन तरीके या तीन संभावित प्रक्रियाएँ हैं। यह सब आपके विचारार्थ प्रस्तुत की गई एक कार्यशील परिकल्पना है। एक व्याख्या है, और पहला यह है कि हम आम तौर पर बाइबल अध्ययन के बारे में कैसे सोचते हैं, एक किताब के भीतर अलग-अलग अनुच्छेदों या अंशों की व्याख्या, बल्कि एक किताब की पूरी व्याख्या या एक किताब के भीतर एक विस्तारित खंड की व्याख्या, बड़े की व्याख्या संपूर्ण पुस्तक का अंश या यहां तक कि संपूर्ण बाइबिल में किसी विषय या मुद्दे की व्याख्या से संबंधित, या बाइबिल के एक हिस्से में, उदाहरण के लिए, भविष्यवक्ताओं में निर्णय, या पुराने नियम में वाचा का अर्थ, या मान लीजिए, पुराने नियम और नए नियम दोनों में समग्र रूप से बाइबल में परमेश्वर के राज्य का अर्थ है।

अब, हम अपना अधिकांश समय पहले वाले पर बिताएंगे और फिर इस बारे में बात करेंगे कि कैसे, यानी अध्ययन का फोकस, एक किताब के भीतर अलग-अलग अंश या अंश, और फिर इस बारे में बात करेंगे कि आप कैसे बहुत कुछ अपना सकते हैं। यहां हम अध्ययन के उन अन्य केंद्रों के बारे में बात कर रहे हैं, जिसका अर्थ है, किसी संपूर्ण पुस्तक की व्याख्या या किसी पुस्तक के भीतर एक विस्तारित खंड या संपूर्ण बाइबल में किसी विषय या मुद्दे की व्याख्या। अब, हालाँकि, पहली चीज़, हमारे अध्ययन के फोकस में, पहली चीज़ जो हम करना चाहते हैं वह है अवलोकन पर ध्यान देना। अवलोकन की प्राथमिक भूमिका वास्तव में प्रेरण के सिद्धांत द्वारा निहित है।

पुनः, यदि प्रेरण या चूंकि प्रेरण में आंदोलन शामिल है क्योंकि प्रेरण एक साक्ष्य दृष्टिकोण है, और इसमें साक्ष्य से निष्कर्ष तक आंदोलन शामिल है, तो जाहिर है, सबसे पहले, साक्ष्य से परिचित होना आवश्यक है, और यह इसके माध्यम से पूरा किया जाता है अवलोकन की प्रक्रिया,

अवलोकन की प्रक्रिया के माध्यम से पूरी की जाती है। अब, अवलोकन में केवल एक पृष्ठ पर शब्दों को पढ़ने से कहीं अधिक शामिल है। इसमें वहां क्या है, इसके बारे में पूरी तरह से जागरूक होना, वहां क्या है, इसके बारे में पूरी तरह जागरूक होना शामिल है।

जैसा कि किसी ने कहा है, देखना उतना आसान नहीं है जितना दिखता है, या देखना उतना आसान नहीं है जितना दिखता है। अवलोकन, वास्तव में, क्योंकि हम अवलोकन में बहुत सी चीजें चूक जाते हैं। यह वास्तव में अच्छी तरह से पालन करने का एक अनुशासन है।

शर्लक होम्स कहते हैं, निश्चित रूप से, यह आर्थर कॉनन डॉयल ने कभी-कभार शर्लक होम्स के मुंह में डाला था, दुनिया स्पष्ट चीजों से भरी हुई है जिसे किसी भी तरह से कोई भी कभी नहीं देखता है। और यह समस्याओं में से एक है. हम आये हैं . हम इस बात के आदी हो गए हैं कि क्या अपेक्षा की जाए।

हम अपेक्षा के आदी हो गए हैं। दुनिया में ऐसा होता है. शर्लक होम्स इसी बारे में बात कर रहा है।

दुनिया स्पष्ट चीजों से भरी हुई है जिन्हें किसी भी तरह से कोई भी कभी नहीं देखता है। क्योंकि हमने सीख लिया है कि क्या उम्मीद करनी है। और वहां बहुत सी ऐसी चीजें हैं जिन पर हमने वास्तव में कभी ध्यान नहीं दिया है और दुनिया में उनकी उपस्थिति से अनभिज्ञ हैं।

लेकिन यह बाइबल के बारे में भी सच है। एक अर्थ में, कोई व्यक्ति जितना बेहतर समझता है, वह उतना ही बेहतर समझता है, या एक व्यक्ति बाइबल से जितना अधिक परिचित होता है, एक अर्थ में, वह व्यक्ति मूल अवलोकन करने के संदर्भ में उतना ही कम अवलोकन करने में सक्षम होता है। फिर, अपेक्षा की शक्ति के कारण।

हम चीजों को बस पढ़ते रहते हैं, उनकी मौजूदगी से बेखबर रहते हैं। मेरे स्वयं के शिक्षण में बार-बार, छात्रों ने मुझसे कहा है, मैं इस परिच्छेद में इसे कैसे चूक सकता हूँ? निःसंदेह, वह वहाँ है। यह स्पष्ट है, लेकिन मैंने इसे नहीं देखा।

अक्सर, वास्तव में, अनुच्छेदों में कुछ सबसे गहन अंतर्दृष्टि उन चीजों को इंगित करने से संबंधित होती हैं जो वहां हैं, स्पष्ट रूप से एक बार इंगित किए जाने के बाद वहां मौजूद हैं, लेकिन लोगों ने पहले कभी नहीं देखा है। यह सब कहने के लिए, हमें अवलोकन की इस पूरी प्रक्रिया के संबंध में वास्तव में जानबूझकर होने की आवश्यकता है। अब, अवलोकन के तीन स्तर हैं।

पहला स्तर समग्र रूप से पुस्तक है। पुस्तक को समग्र रूप से देखने से शुरुआत करना, फिर से, उस सिद्धांत को दर्शाता है जिसे हमने कुछ क्षण पहले व्यक्त किया था, और वह यह है कि पुस्तक एक बुनियादी साहित्यिक इकाई है। इसलिए, जब हम पुस्तक को समग्र रूप से देखकर शुरू करते हैं, और वैसे, इसमें समग्र रूप से पुस्तक का सर्वेक्षण शामिल होता है, क्योंकि पुस्तक सामग्री की एक विस्तारित इकाई है, हम पीछे खड़े होकर और पुस्तक का सर्वेक्षण करके पुस्तक का अवलोकन करते हैं। .

उदाहरण के लिए, किसी ऊंची इमारत के अवलोकन डेक, उदाहरण के लिए, एम्पायर स्टेट बिल्डिंग, में जाकर हम क्या करेंगे, और हमारे आस-पास के व्यापक क्षेत्र का सर्वेक्षण करते हुए, हमारे आस-पास के पूरे क्षेत्र को देखेंगे। पुस्तक के अवलोकन में हम यही करते हैं। इसमें पुस्तक का सर्वेक्षण शामिल है।

पीछे खड़े होकर समग्र रूप से पुस्तक के व्यापक आंदोलन का एहसास प्राप्त करें। तो, पहला स्तर समग्र रूप से पुस्तक का है, समग्र रूप से पुस्तक का सर्वेक्षण, और फिर संपूर्ण भाग के रूप में भागों का सर्वेक्षण। फिर से, पीछे खड़े होकर सामग्री की कमोबेश विस्तारित इकाइयों के विस्तार का एहसास प्राप्त करना।

किसी पुस्तक के भीतर एक संपूर्ण विभाजन या किसी पुस्तक के भीतर एक संपूर्ण खंड। तीसरा स्तर पुस्तक के भीतर व्यक्तिगत अंशों का केंद्रित अवलोकन है। इसमें एक विस्तृत अवलोकन, या एक अनुच्छेद के भीतर अलग-अलग शब्दों या वाक्यों का विस्तृत विश्लेषण शामिल है।

आप देखेंगे कि अवलोकन के तीन स्तर बाइबिल के भीतर सामग्री के तीन स्तरों से कैसे संबंधित हैं। संपूर्ण पुस्तक, फिर से, बाइबिल पुस्तक की एक बुनियादी साहित्यिक इकाई है, लेकिन किसी भी पुस्तक के भीतर, आपके पास सामग्री की कमोबेश विस्तारित इकाइयाँ, एकीकृत भाग होते हैं। और यदि आप सच्चे होने जा रहे हैं यदि आपकी पद्धति बाइबिल की प्रकृति के अनुरूप होने जा रही है, तो आपकी पद्धति में पुस्तक के भीतर उन विस्तारित इकाइयों पर ध्यान शामिल करने की आवश्यकता है क्योंकि वे वहाँ हैं।

वे उस पुस्तक की संरचना का हिस्सा हैं। लेकिन, निःसंदेह, एक किताब केवल व्यापक इकाइयों या उस जैसी इकाइयों से नहीं बनती है। निःसंदेह, आपके पास सामग्री के भीतर विवरण, व्यक्तिगत वाक्य और शब्द भी हैं, और इसलिए हम अवलोकन के तीसरे स्तर में उस पर भी ध्यान देते हैं।

खैर, हम संपूर्ण पुस्तक के सर्वेक्षण से शुरुआत करते हैं। और... अब, समग्र रूप से पुस्तक के सर्वेक्षण से शुरुआत करना महत्वपूर्ण है क्योंकि न केवल जब हम समग्र रूप से पुस्तक का सर्वेक्षण करते हैं तो हम वहीं से शुरू करते हैं जहाँ से लेखक शुरू करता है। लेखक, आप जानते हैं, और यह स्पष्ट रूप से बाइबिल के लेखकों के मामले में है, अलग-अलग वाक्य या पैराग्राफ नहीं लिखते हैं और फिर उन्हें बेतरतीब ढंग से एक साथ नहीं जोड़ते हैं।

यह विश्वास करने का हर कारण है कि हमारी बाइबिल की पुस्तकों की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई है ताकि हमारे लेखक वास्तव में बैठें और पूरी किताब की योजना, योजना, पूरी योजना पर विचार करें, और फिर अलग-अलग हिस्सों, विवरणों को उसके अनुसार लिखें। वह योजना बनाएं जो उनके दिमाग में पहले से थी, ताकि जब हम पुस्तक का सर्वेक्षण करें, तो हम वास्तव में वहीं से शुरू करें जहाँ लेखक करता है, वास्तव में पूरी पुस्तक की योजना के साथ। इसके अलावा, पुस्तक के सर्वेक्षण से शुरुआत करना महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी अनुच्छेद की व्याख्या करने में, यदि आप किसी अनुच्छेद की प्रासंगिक व्याख्या करने जा रहे हैं, तो आपको पूरी पुस्तक के भीतर इसके कार्य के प्रकाश में इसकी व्याख्या करने की आवश्यकता होगी।

इसलिए, पुस्तक के सर्वेक्षण से शुरुआत करके, हम वास्तव में रचना करते हैं, हम वास्तव में खुद को परिचित करते हैं, हम इसे ऐसे कह सकते हैं, किसी भी परिच्छेद के पड़ोस से।

आप वास्तव में किसी भी अनुच्छेद की व्याख्या नहीं कर सकते हैं जब तक कि आप पहले उस अनुच्छेद के पड़ोस के साथ उस अनुच्छेद के पुस्तक संदर्भ से परिचित न हों, और आप पुस्तक का सर्वेक्षण करके किसी भी अनुच्छेद के पुस्तक संदर्भ, किसी भी अनुच्छेद के पुस्तक संदर्भ से परिचित न हों। तो, आप पुस्तक के सर्वेक्षण से शुरुआत करते हैं, फिर आप अलग-अलग अनुच्छेद पर जाते हैं, और फिर आप पुस्तक के भीतर उसकी सेटिंग के आलोक में उस व्यक्तिगत अंश की व्याख्या करने में सक्षम होंगे। अब, पुस्तक सर्वेक्षण के संदर्भ में, जिस तरह से हम इसे करते हैं उसमें मूल रूप से छह चरण शामिल होते हैं।

और इसलिए, हम सबसे पहले इन्हें ही देखेंगे। पहले में पुस्तक के भीतर सामग्री की पहचान शामिल है। और यह वास्तव में दो प्रकार की सामग्रियों में टूट जाता है।

सबसे पहले, पुस्तक में सामान्य सामग्रियों की पहचान। इसमें वास्तव में मूल रूप से यह प्रश्न शामिल है, जब हम पुस्तक पढ़ते हैं तो स्वयं से पूछना और इस प्रश्न का उत्तर देना : इस पुस्तक की सामग्री की प्राथमिक चिंता क्या प्रतीत होती है? इस पुस्तक की सामग्री की प्राथमिक चिंता क्या प्रतीत होती है? अब, तीन हैं, मूल रूप से यहाँ वास्तव में चार प्रमुख संभावनाएँ हैं। प्रत्येक बाइबिल पुस्तक अपनी सामान्य सामग्री के संदर्भ में, इन चार चीजों में से एक को शामिल करेगी।

सबसे पहले जिसका मैं उल्लेख करूँगा वह वैचारिक है। क्या इस पुस्तक की सामग्री की प्राथमिक चिंता विचारों की प्रस्तुति है? यदि हाँ, तो हम कहते हैं कि सामान्य सामग्रियाँ वैचारिक हैं। यह स्पष्टतः प्रत्येक पत्र का मामला है।

उदाहरण के लिए, रोमनों की पुस्तक की सामान्य सामग्री वैचारिक है। निःसंदेह, आपको रोमियों की पुस्तक में वर्णित व्यक्तियों के प्रति चिंता है, उदाहरण के लिए, इब्राहीम के लिए। लेकिन आप देखेंगे कि रोमियों की किताब मुख्य रूप से इब्राहीम के बारे में नहीं है।

जहाँ तक इब्राहीम का उल्लेख रोमनों की पुस्तक में किया गया है, यह एक विचार की प्रस्तुति की सेवा में है। बेशक, इस मामले में, विश्वास द्वारा औचित्य का विचार। इसलिए रोमियों की पुस्तक की प्राथमिक चिंता विचार है।

फोकस विचारों पर है। और इसलिए, रोमनों की सामान्य सामग्री, हम कहते हैं, वैचारिक हैं। वैसे, वैचारिक सामान्य सामग्री का एक और उदाहरण, मुझे लगता है, अय्यूब होगा।

आप जानते हैं, अय्यूब की पुस्तक मुख्य रूप से अय्यूब के बारे में नहीं है। मेरा मतलब है, आप अय्यूब की जगह किसी और को ले सकते हैं जिसके पास समान अनुभव हो, और आपके पास वही किताब होगी। तो, अय्यूब का व्यक्तित्व, एक व्यक्ति के रूप में अय्यूब, अय्यूब की पुस्तक में महत्वपूर्ण नहीं है।

कम से कम, प्राथमिक रूप से महत्वपूर्ण नहीं। अय्यूब की पुस्तक में जो महत्वपूर्ण है, प्राथमिक रूप से महत्वपूर्ण है, वह है विचार, और विचार की खोज, विचार के माध्यम से काम करना, विचार की समझ, स्पष्ट धर्मी लोगों की पीड़ा। अब, दूसरे प्रकार की सामान्य सामग्री ऐतिहासिक है।

मैंने यहां भजन 78 का उल्लेख किया है, लेकिन मैं एक और उदाहरण देता हूँ, जो उन ऐतिहासिक भजनों में से एक है। यह वास्तव में भजन लिखे जाने के समय तक, अपने लोगों, इज़राइल के साथ भगवान के व्यवहार का इतिहास बताता है।

इसका एक अन्य उदाहरण आमोस की पुस्तक होगी, जहां आमोस की पुस्तक मुख्य रूप से इज़राइल के उत्तरी राज्य पर भगवान के फैसले के आसपास की घटनाओं से संबंधित है। वास्तव में, वे घटनाएँ जो उसके लोगों, इस्राएल पर परमेश्वर के न्याय की ओर ले जाती हैं, और स्वयं इस्राएल पर परमेश्वर के न्याय की घटना। फिर, अमोस में, आपके यहाँ अन्य प्रकार की चीज़ें चल रही हैं, लेकिन वास्तव में ध्यान घटनाओं पर है, और ऐतिहासिक सामान्य सामग्रियों से हमारा तात्पर्य यही है। यह पुस्तक की सामग्री, घटनाओं की प्रस्तुति की प्राथमिक चिंता है।

वैसे, ऐतिहासिक सामान्य सामग्रियों का इसका एक और उदाहरण एक्सोडस होगा। क्षमा करें, मैंने उस संबंध में एक त्रुटि की है। निर्गमन नहीं, बल्कि संख्याओं की पुस्तक, जहाँ संख्याएँ मुख्य रूप से उन घटनाओं से संबंधित हैं जो इज़राइल के जीवन में घटित होती हैं क्योंकि इज़राइल, निश्चित रूप से, जंगल में भटक रहा है, एक के बाद एक घटनाएँ।

तीसरे प्रकार की सामान्य सामग्री जीवनी संबंधी है। यदि पुस्तक की सामग्री की प्राथमिक चिंता व्यक्तियों की प्रस्तुति है, तो हम कहते हैं कि सामान्य सामग्री जीवनी संबंधी है। मुझे लगता है कि यह स्पष्ट रूप से रूथ की पुस्तक रूथ के मामले में है, जहां चिंता वास्तव में घटनाओं या विचारों पर इतनी अधिक नहीं है, हालांकि वे मौजूद हैं, क्योंकि यह व्यक्तियों पर है।

रूथ का व्यक्तित्व, नाओमी का व्यक्तित्व, बोअज़ का व्यक्तित्व, और ये व्यक्ति कैसे एक-दूसरे से संबंधित हैं और एक-दूसरे को जवाब देते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं। यह वास्तव में व्यक्तियों पर केंद्रित है। एक अन्य प्रकार की सामान्य सामग्री भौगोलिक होगी।

जब प्राथमिक चिंता स्थानों की प्रस्तुति पर होती है तो हमारे पास भौगोलिक सामान्य सामग्री होती है। और, निःसंदेह, आपके पास यहां कुछ स्पष्ट उदाहरण हैं। मुझे लगता है कि अधिक स्पष्ट उदाहरणों में से एक जोशुआ की पुस्तक होगी, जहां चिंता है, निश्चित रूप से, भूमि पर जोर है।

वास्तव में, स्थान, भूमि, कनान की भूमि, निश्चित रूप से, और भूमि के भीतर के स्थान, भौगोलिक प्रकार की चिंता, वास्तव में यहोशू की पुस्तक में व्यक्तियों के लिए भी चिंता से बढ़कर है। जोशुआ की किताब मुख्यतः यहोशू के बारे में नहीं है। यह मुख्य रूप से भूमि और भूमि पर विजय तथा विभाजन के बारे में है।

यदि आप वास्तव में अपने आप से पूछते हैं, कि क्या यहोशू की पुस्तक के कार्यक्रम में यहोशू के कारण भूमि का महत्व है या क्या यहोशू का भूमि के कारण महत्व है, तो मुझे लगता है कि उत्तर

बहुत स्पष्ट है। जोशुआ की पुस्तक के मामले में, यहोशू का व्यक्तित्व भूमि के संबंध में उसकी भूमिका के कारण महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह भूमि पर विजय प्राप्त करने में नेतृत्व करता है, और क्योंकि वह मुख्य रूप से भूमि के विभाजन में शामिल है। यह भौगोलिक प्रगति, भौगोलिक स्थिति और भौगोलिक कब्ज़ा है जो जोशुआ के व्यक्ति को जोशुआ की किताब में महत्व देता है, न कि इसके विपरीत।

निर्गमन के मामले में, मुझे लगता है कि आपके पास भौगोलिक सामान्य सामग्री है क्योंकि वास्तव में निर्गमन मुख्य रूप से मिस्र की भूमि से इज़राइल की आवाजाही, मिस्र की भूमि में गोशेन, लाल सागर के माध्यम से और जंगल के माध्यम से माउंट सिनाई तक, से संबंधित है। स्थान, एक स्थान से दूसरे स्थान तक। वास्तव में, निर्गमन में, मिस्र की भूमि अपने आप में इतनी अधिक जगह नहीं है जितनी एक प्रकार का अस्तित्व है। दूसरे शब्दों में, निर्गमन की पुस्तक में इस स्थान का महत्व है।

यह सब जगह के बारे में है। और फिर, निस्संदेह, निर्गमन की पुस्तक में मूसा बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा कोई नहीं कह सकता कि वह नहीं है।

लेकिन फिर भी, अगर आप एक्सोडस की किताब को उसकी शर्तों पर पढ़ते हैं, तो यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि मूसा का महत्व उस भूमिका के अधीन है जो उसने इज़राइल को मिस्र से माउंट सिनाई तक पहुंचाने में निभाई थी। जब परमेश्वर ने पहली बार मूसा को सिनाई की ढलानों पर देखा, तो वह निश्चित रूप से, निर्गमन के उन अध्यायों की शुरुआत में, तीसरे अध्याय के आसपास, इस बिंदु पर मिस्र की भूमि छोड़ चुका था या भाग गया था। निर्गमन के समय, जब परमेश्वर ने पहली बार मूसा की चर्चा की, तो परमेश्वर ने उससे कहा, उसने मूसा को यह कहकर आज्ञा दी, कि तू मेरे लोगों को मिस्र से निकाल कर इस स्थान तक ले आएगा। और वह कहता है कि वे इस पर्वत पर मेरी आराधना करेंगे।

और निर्गमन की पुस्तक अपने चरम पर पहुंचती है, वास्तव में चरमोत्कर्ष, सिनाई पर्वत पर तम्बू के निर्माण में, और परमेश्वर की शकीना महिमा उस स्थान पर तम्बू पर उतरती है। अब, वास्तव में, किसी भी पुस्तक की सामान्य सामग्री के रूप में इनमें से केवल एक की पहचान करना महत्वपूर्ण है। मैंने उल्लेख किया है कि आपके पास अक्सर, वास्तव में, आम तौर पर, इनमें से एक से अधिक उपहार होते हैं।

अक्सर, आपकी किताब में ये चारों मौजूद होंगे। लेकिन उनमें से एक को पुस्तक के प्राथमिक फोकस के रूप में पहचानना महत्वपूर्ण है। अब, आप कह सकते हैं, ठीक है, आप उनमें से दो या तीन को किसी विशेष पुस्तक में सामान्य सामग्री के रूप में क्यों नहीं पहचान सके? यदि आपने ऐसा किया है, तो आप वास्तव में कह रहे होंगे कि पुस्तक की सामग्री की प्राथमिक चिंता वैचारिक, जीवनी और भौगोलिक विचारों के बीच संबंध है।

किस मामले में, और निश्चित रूप से, सिद्धांत रूप में, यह संभव होगा, लेकिन यह उस तरह की बात है जो आधुनिक लेखक करते होंगे, लेकिन प्राचीन लेखक ऐसा नहीं करते थे। प्राचीन लेखकों ने जिस तरह से चीज़ों का निर्माण किया, उसके मामले में वे उतने जटिल नहीं थे। और इसलिए,

बाइबल में लगभग कभी भी आपने किताब का ध्यान रिश्ते पर, इस तरह की विभिन्न चीजों के जटिल रिश्ते पर केंद्रित नहीं किया है।

बल्कि, बाइबिल की किताबों में एक साधारण फोकस, एक साधारण फोकस होता है। यह कोई विशेष चिंता का विषय नहीं है, बल्कि यह या तो विचारों पर, या घटनाओं पर, या व्यक्तियों पर, या स्थानों पर एक साधारण फोकस है। अब, सामान्य सामग्रियों की पहचान करने का उद्देश्य क्या है? व्याख्यात्मक भुगतान के लिए किस प्रकार का भुगतान है? क्या अवलोकन के बिंदु पर ऐसा करने का कोई तरीका होगा? खैर, एक बात के लिए, यह मदद करता है; एक बार जब हम व्याख्या कर लेंगे तो इससे हमें पुस्तक की प्रमुख विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी।

उदाहरण के लिए, यदि किसी विशेष पुस्तक की सामान्य सामग्री जीवनी संबंधी है, तो यह हमें उस पुस्तक में प्रस्तुत प्रमुख व्यक्ति या व्यक्तियों की प्रस्तुति और अर्थ का पता लगाने के लिए प्रेरित करेगी। दूसरे शब्दों में, यह हमें उस पुस्तक के चरित्र अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करेगा। अब, मैंने पहले उल्लेख किया था कि इब्राहीम का उल्लेख रोमनों की पुस्तक में किया गया है।

अब, यदि कोई रोमनों की पुस्तक के वैचारिक चरित्र या वैचारिक सामान्य सामग्रियों को गंभीरता से ले रहा है, हालांकि अब्राहम का उल्लेख वहां किया गया है, तो वह रोमनों में अब्राहम के चरित्र का अध्ययन करने के लिए इच्छुक नहीं होगा। यह उस पुस्तक की सामान्य सामग्री का एक प्रकार का विरोधाभास होगा क्योंकि रोमनों की पुस्तक मुख्य रूप से एक चरित्र के रूप में अब्राहम से संबंधित नहीं है, बल्कि एक उदाहरण के रूप में या विश्वास द्वारा औचित्य के विचार का पता लगाने के अवसर के रूप में अब्राहम से संबंधित है।

इसलिए, यह रोमनों की सामान्य सामग्रियों के अनुरूप अधिक होगा, एक बार जब आप व्याख्या पर आते हैं, तो विचारों के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करें, रोमनों में प्रमुख विचारों के अर्थ के बजाय, प्रमुख व्यक्तियों या प्रमुख पात्रों के अर्थ पर ध्यान केंद्रित करें। वह पुस्तक, जो उत्पत्ति की पुस्तक में उपयुक्त होगी, जिसमें जीवनी संबंधी सामान्य सामग्रियां हैं जहां अब्राहम को वास्तव में एक चरित्र के रूप में उसके महत्व के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है, ताकि विचारों की प्रस्तुति प्रस्तुति की तुलना में उत्पत्ति में अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण हो व्यक्तियों की, और इसलिए, इसे ध्यान में रखते हुए जब आप व्याख्या में उत्पत्ति पर जाते हैं, तो आप उस पुस्तक के भीतर विचारों की प्रस्तुति पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय व्यक्तियों या पात्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। तो, सामान्य सामग्रियों की पहचान करने का यह एक उद्देश्य या एक कारण है। एक बार जब हम व्याख्या पर पहुंच जाएंगे तो इससे सबसे प्रमुख विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी।

यह वास्तव में पुस्तक की संरचना, विशेषकर रैखिक विकास की ओर भी इशारा करेगा। पुस्तक की मुख्य इकाइयाँ और उपइकाइयाँ, पुस्तक का विवरण, आप अपनी सामान्य सामग्री के रूप में जो पहचानते हैं उससे सीधे संबंधित और सीधे व्युत्पन्न होंगे। जब हम पुस्तक सर्वेक्षण के दूसरे चरण को देखेंगे, जो पुस्तक की संरचना की पहचान है, तो मैं इस पर थोड़ा वापस आऊंगा।

लेकिन जिसे आप अपनी सामान्य सामग्री के रूप में पहचानते हैं उसका असर इस बात पर पड़ेगा कि आप पुस्तक की मुख्य इकाइयों को तोड़ते हुए पुस्तक को कैसे देखते हैं, और इसके माध्यम से, समग्र रूप से पुस्तक के संदेश की आपकी समझ पर असर पड़ सकता है। सामान्य सामग्रियों की पहचान करने का तीसरा उद्देश्य यह है कि यह संश्लेषण में सहायता करता है। यह पुस्तक के संश्लेषण के लिए रूपरेखा के संभावित आधार के रूप में काम कर सकता है।

यह वास्तव में नंबर एक के साथ जुड़ा हुआ है, प्रमुख विशेषताओं और इसी तरह पर ध्यान केंद्रित करता है, ताकि, उदाहरण के लिए, उपदेश या शिक्षण में, आप पुस्तक के भीतर प्रमुख पात्रों और इसी तरह के प्रमुख पात्रों पर उपदेशों की एक श्रृंखला करना चाहें। जबकि, यदि आपकी पुस्तक भौगोलिक थी, तो आप पुस्तक के संश्लेषण पर एक श्रृंखला बनाना चाह सकते हैं, जो शायद एक उपदेश श्रृंखला में, इस पुस्तक के महत्वपूर्ण स्थानों पर या आपके पास क्या है, इस पर प्रतिबिंबित होगी। अब, सामान्य सामग्रियों से परे सामग्रियों में शामिल दूसरी चीज़ विशिष्ट सामग्री है।

ऐसा करना ज़रूरी नहीं है, लेकिन प्रत्येक अध्याय को एक संक्षिप्त वर्णनात्मक शीर्षक देना सहायक हो सकता है, जो वास्तव में उस अध्याय की सामग्री को याद करने में सहायता करेगा और आपको पुस्तक की सामग्री के बारे में सोचने में मदद करेगा। पाठ का सहारा लें। अध्याय शीर्षक। यदि आप प्रत्येक अध्याय को एक शीर्षक देने जा रहे हैं, तो इन अध्यायों को शीर्षक देने के लिए, इन शीर्षकों को संक्षिप्त रखना अच्छा होगा, आम तौर पर एक या दो शब्दों से अधिक नहीं, अद्वितीय, ताकि आप जो शीर्षक किसी भी अध्याय को दे सकें। पुस्तक उस पुस्तक के किसी अन्य अध्याय पर लागू नहीं होती है।

सरल। कभी-कभी, आपके पास एक अध्याय में दो या तीन अलग-अलग चीजें चल रही होती हैं, और यह बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं है कि जो लोग हमारी बाइबिल को अध्यायों में विभाजित करने के लिए जिम्मेदार हैं, उन्होंने उन्हें ठीक उसी जगह क्यों विभाजित किया, जहां उन्होंने किया था, इसलिए एक अध्याय बनाना आसान नहीं होगा। सरल शीर्षक जो वास्तव में, आपके लिए, अध्याय में मौजूद हर चीज़ को समाहित करता है, लेकिन ऐसा करने का प्रयास करें। ऐसे शीर्षक के साथ आने से बचें जो वहां मौजूद हर, शायद, दो या तीन प्रमुख चीजों को संबोधित करता है या पकड़ने की कोशिश करता है, इसे सरल रखने का प्रयास करें।

आपके मन की विशिष्टताओं को देखते हुए, आपके मन में बस एक विचार, उस अध्याय की विविध सामग्री को एक साथ लाने में मदद करेगा। और फिर, निःसंदेह, यह सहयोगी होना चाहिए, यानी, आपके अपने दिमाग में, और इससे आपको उस अध्याय की सामग्री में जो कुछ भी है उसे ध्यान में लाने, संबद्ध करने में मदद मिलनी चाहिए, जिसका वास्तव में मतलब है, मैं कर सकता था यहाँ एक और विशेषण भी जोड़ा, और वह यह कि यह व्यक्तिगत होना चाहिए। सही या ग़लत अध्याय शीर्षक जैसी कोई चीज़ नहीं है।

कोई भी शीर्षक जो आपके लिए कारगर हो, अच्छा शीर्षक है, जो आपके लिए सहयोगी हो, अच्छा शीर्षक है। इन अध्याय शीर्षकों को करने का उद्देश्य, सबसे पहले, प्रतिबिंब है। जैसा कि मैं कहता हूँ, कभी-कभी किसी अध्याय के लिए शीर्षक बनाना आसान या स्पष्ट नहीं होता है।

इसलिए आपको यहां क्या है, इस अध्याय की सामग्री के बारे में थोड़ा सोचना होगा। आपको उस अध्याय की सामग्री पर विचार करना होगा। और कोई भी चीज़ जो आपको वापस जाने और वहां जो कुछ है उस पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है, वास्तव में यह अवलोकन का एक रूप है, सहायक है।

इसके अलावा, निश्चित रूप से, स्पष्ट रूप से स्मरण के लिए, आपको पाठ का सहारा लिए बिना और संदर्भ के लिए इस अध्याय की सामग्री के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए ताकि आप वास्तव में यह पहचानने में सक्षम हो सकें कि पुस्तक के भीतर चीजें कहां पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, आप जानेंगे कि कुरनेलियुस की कहानी और कुरनेलियुस का परिवर्तन 10वें अध्याय में पाया जाता है। ये अध्याय शीर्षक आपको इसे याद रखने में मदद करेंगे।

पिसिडियन अन्ताकिया में आराधनालय के सामने पॉल का उपदेश 13वें अध्याय में पाया जाता है। पॉल और बरनबास के बीच के रास्ते अलग होने का विवरण 15वें अध्याय में मिलता है। यहां तक कि याद करने में सक्षम हो, यह याद रखने के लिए कि पृष्ठ पर, यह 13वें अध्याय के बिल्कुल अंत में पाया जाता है।

फिलिप्पी में पौलुस की सेवकाई, वास्तव में फिलिप्पी में पौलुस और सीलास की सेवकाई 16वें अध्याय में है। ये अध्याय शीर्षक वास्तव में आपको पाठ का सहारा लिए बिना पुस्तक की सामग्री के माध्यम से सोचने में मदद करेंगे। संयोग से, यह काफी मददगार हो सकता है क्योंकि आप सोच रहे हैं कि बाइबिल की किताब में चीजें एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं।

क्योंकि अक्सर किसी पुस्तक के अंशों के बीच संबंध हमारे पास आते हैं, उनके बारे में अंतर्दृष्टि तब नहीं आती जब हमारे सामने वास्तव में पाठ खुला होता है और हम पृष्ठ के शब्दों को देख रहे होते हैं, बल्कि तब आते हैं जब हम कुछ और कर रहे होते हैं। जब हम गाड़ी चला रहे होते हैं या शायद बगीचे में काम कर रहे होते हैं और किताब की सामग्री, अध्याय के शीर्षकों के बारे में सोच रहे होते हैं, कौन से अध्याय के शीर्षक हमें ऐसा करने में मदद करते हैं, जैसे ही हम ऐसा कर रहे होते हैं, लगभग अचानक, कनेक्शन आ जाएंगे। ओह, ठीक है, ऐसा लगता है कि यह किसी ऐसी चीज़ से संबंधित है, जिसे कोई कह सकता है, पहले किताब में पाया गया था, और मैंने उन दो चीजों को कभी एक साथ नहीं रखा था, लेकिन अब, जैसा कि मैं कुछ और कर रहा हूँ, बस बिना सोचे समझे इस पुस्तक के बारे में पाठ मेरे सामने खुला होने के कारण, मैं अब यहां उन कनेक्शनों पर विचार कर रहा हूँ, जो काफी महत्वपूर्ण हो सकते हैं, जो मेरे सामने कभी नहीं आते अगर मैं खुद को केवल पाठ को अपने सामने खुला रखने और उसे देखने तक ही सीमित रखता। पन्ने।

अब पुस्तक के सर्वेक्षण का दूसरा घटक या दूसरा चरण वास्तव में पुस्तक की संरचना को शामिल करता है, जिसमें स्वयं दो घटक होते हैं। संरचना में दो घटक होते हैं।

पहले में वास्तव में पुस्तक की मुख्य इकाइयों और उपइकाइयों की पहचान करना शामिल है। यह वास्तव में रैखिक प्रगति से संबंधित है। पुस्तक की रैखिक प्रगति।

मुख्य इकाइयाँ और उपइकाइयाँ, पुस्तक का विवरण। संरचना का दूसरा घटक संपूर्ण पुस्तक में हमारे प्रमुख संरचनात्मक संबंध हैं। संगठनात्मक प्रणालियाँ जो वास्तव में जांच करती हैं कि पुस्तक के विभिन्न तत्व गतिशील रूप से एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं।

यह रुकने के लिए एक अच्छी जगह है। हमने अगले खंड की शुरुआत में संरचना की अवधारणा को बहुत संक्षेप में पेश किया। हम वापस आएँगे और इसकी अधिक ध्यानपूर्वक जाँच करेंगे।

लेकिन जैसा कि मैं कहता हूँ, यह वास्तव में केंद्र में है। संरचनात्मक विश्लेषण का यह व्यवसाय पुस्तक सर्वेक्षणों में हम जो करते हैं उसके केंद्र में है। और इसलिए, इससे परीक्षा में वास्तव में बहुत अधिक सावधानी बरतनी होगी।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 4 है, आगमनात्मक पद्धति, सटीक और स्पष्ट, गहन, परिवर्तनकारी, संचारी, और फिर, एक संपूर्ण बाइबल सर्वेक्षण।